सामंजस्य बैठाने की कला

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सम्पूर्ण विश्व, सम्पूर्ण सृष्टि सांमजस्य से चल रही है। सामंजस्य की कला सबसे अधिक प्रकृति में है। सूर्य का समय से उदित होना और अस्त होना, ऋतुओं में परिवर्तन होना, दिन–रात होना, प्रकृति में परिवर्तन होना सामंजस्य का परिणाम है। बिना सामंजस्य को कोई कार्य नहीं हो सकता। सामंजस्य से ही संसार चलता है। देश का विकास भी सामंजस्य से ही होता है। हमारा देश अनेकता में एकता वाला देश है। यह सामंजस्य का सबसे बड़ा परिणाम है। हर देश को अपने विकास के लिए सामंजस्य स्थापित करना होता है। यदि पृथ्वी में सामंजस्य ठीक नहीं रहता तो भूकम्प आ जाता है। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति या सभी ग्रहों की स्थिति थोड़ी सी विचलित हो जाए तो प्रलय हो सकती है।

व्यक्ति की सोच में और विचारों में सामंजस्य होना चाहिए, परिवार में सामंजस्य होना चाहिए। सामंजस्य से ही परिवार चलता है। यदि सहिष्णुता, पारिवारिक सामंजस्य या एक–दूसरे के साथ मेल–मिलाप न हो तो भेद पैदा हो जाता है। सामंजस्य से ही विकास सम्भव है। विश्व के सभी देश अपनी आंतरिक व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित करने के लिए आयात–निर्यात करते हैं। आवश्यकता से अधिक वस्तुओं को दूसरे देशों को निर्यात की जाती है। जिस वस्तु की देश में कमी होती हैं उसको दूसरे देशों से आयात किया जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है कि देश में सामंजस्य ठीक रहे। सहिष्णुता, प्रेम, नैतिकता सामंजस्य के परिणाम है।

सामंजस्य का अर्थ है प्रत्येक परिस्थिति में हर जगह अपने को मिला लेना। जो व्यक्ति इस कला को जानता है, जीवन में उसकी हार नहीं होती। मानव परिवार से लेकर राष्ट्र तक अपने सम्बन्धों को बनाता है। परिवार में अनेक सदस्य होते है। सब की रुचि और सबका मिजाज अलग–अलग होता है। कोई उग्र स्वभाव का होता है तो कोई नम्र स्वभाव का। सभी को एक साथ रहने के लिए तालमेल बैठाना आवश्यक होता है। परिवार में एड्जेस्ट करने के लिए बड़ों का सम्मान करना पड़ता है। बड़ों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे छोटों को आदर दे और उनके

प्रति स्नेह का भाव रखे। जहां आवश्यक हो उन्हें सुझाव देकर अपनी बात को उनके सामने रखे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को एक दूसरे के साथ तालमेल बैठाना होता है।

सामंजस्य की शिक्षा परिवार से ही प्रारंभ हेाती है। परिवार को नागरिकता की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक को माता–पिता और अन्य पारिवारिकजन जो कुछ भी शिक्षा देते हैं उसी के अनुरूप बालक के चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा, खेल एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ सम्बन्ध एड्जेस्टमेंट के हिसाब से ही होता है। जब बच्चा विद्यालय में पढ़ने के लिए जाता है तो वहां अनेक वस्तुओं से उसका सम्पर्क होता है। धीरे–धीरे बच्चा सभी के साथ एड्जेस्टमेंट करके रहना सीखता है और पढ़ना सीखता है। धीरे–धीरे यह भावना और आगे बढ़ती है और वह सबके साथ घुल–मिल जाता है। कोई भी खेल हो जब उस खेल को टीम भावना से खेला जाता है तो वियजश्री अवश्य मिलती है। यदि खिलाड़ियों तालमेल न हो तो खेल को जीतना बड़ा मुश्किल हो जायेगा। क्रिकेट के मैच में दो देश जब आमने–सामने प्रतिद्वन्द्वी के रूप में क्रिकेट खेलते है तो हर दल को बहुत ही एड्जेस्टमेंट करना पड़ता है। इसी प्रकार सभी खेलों में इस भावना का होना आवश्यक है। एड्जेस्टमेंट के बढ़ने से दृष्टिकोण विधेयात्मक बनता है और जिस व्यक्ति का विधेयात्मक दृष्टिकोण रहता है वहीं आगे बढ़ता है।

महाभारत के प्रसंग में देखा जाये तो भगवान श्रीकृष्ण ने कौरव और पाण्डव दोनों पक्षों में सामंजस्य कराने का बहुत प्रयास किया। किन्तु दुर्योधन के निषेधात्मक दृष्टिकोण के कारण यह संभव न हो सका। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध अवश्यंभावी हो गया और इस युद्ध का परिणाम सबके सामने है। फलतः कौरवों का विनाश हुआ। निषेधात्मक दृष्टिकोण विनाश को बुलावा देता है और रचनात्मक दृष्टिकोण उन्नति प्रदान करता है। महान् व्यक्तियों का व्यक्तित्व सदैव रचनात्मक होता है। वे विवाद नहीं करना चाहते। यदि कोई उन्हें अपशब्द भी कह दे तो वे उसका प्रतिकार नहीं करते। विवाद तब होता है जब अहंकार टकराता है। अहंकार की लड़ाई में सबकुछ नष्ट हो जाता है।

दो पक्षों में जब विवाद होता है तो दोनों न्यायालय की शरण में जाते है। विवाद के पहले यदि दोनों पक्ष बैठकर आपस में समझौता कर लें तो उन्हें न्यायालय में न जाना पड़े और

एक–दूसरे के विरुद्ध लड़ना न पड़े, धन का नुकसान न हो। जो धन अनावश्यक रूप से न्यायालय में जाने से खर्च हो रहा है उसको किसी रचनात्मक कार्य में यदि लगाया जाये तो उससे विकास होगा। न्यायालय भी यही कार्य करता है। दोनों के गुण और दोष के अनुसार दण्ड और पुरस्कार देता है और दोनों पक्षों को स्वीकार करना पड़ता है। यदि दोनों पक्ष बैठकर संतोष धारण करके आपस में समझौता कर लें तो किसी को न तो नुकसान होगा न फायदा। जिसको जो मिलना चाहिए वह मिल जायेगा। प्रकृति सामंजस्य की शिक्षा मानव को देती है। प्रकृति पंचभूतात्मक है। यदि पांचों तत्व आपस में न मिले तो सृष्टि का बनना असंभव है, किन्तु ऐसा होता नहीं। सामंजस्य जीवन का मूलमंत्र है।